एवरशाइन

रत्नमाला

(राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर आधारित हिंदी पाठ्य पुस्तक)

भाग-7

डा० सुखपाल सिंह

एम. ए. (हिंदी, अंग्रेजी)
पी-एच. डी. (हिंदी)
साहित्यरत्न (संस्कृत)

एवरशाइन पब्लिशर्ज़

Mobile No. : 9560408043, 9868877950, Fax : 28112353
E-Mail : evershinepub@gmail.com

इस पुस्तक का कोई भी अंश तथा चित्र किसी भी प्रकार से उद्धृत करना सर्वथा वर्जित है ।
इस पुस्तक की कुंजी, गाइड अथवा किसी भी प्रकार की सहायक पुस्तक छापना वर्जित है ।

प्रकाशक :

एवरशाइन पब्लिशर्ज़

WZ-348, नांगल राया, नई दिल्ली-110046

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कला सज्जा :

जैन कंप्यूटर्स

प्राक्कथन

यह पुस्तकमाला 'एवरशाइन रत्नमाला' राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा के आधार पर तैयार किए गए पाठ्यक्रम पर आधारित है । राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की नई रूपरेखा में बच्चे को पाठ्यक्रम के हर विषय से जोड़कर देखा गया है, इसीलिए इस पुस्तकमाला की पाठ्य सामग्री का चयन करते समय बच्चे के भाषायी विकास की समग्रता को ध्यान में रखा गया है, साथ ही बच्चों की बौद्धिक क्षमता, रुचि और उनके लिए उपयोगिता को भी पर्याप्त महत्व दिया गया है । पाठों के चयन में केंद्रीय शिक्षा सुझावों पर आधारित विषयों पर विशेष ध्यान दिया गया है । पुस्तकमाला को विविधतापूर्ण और रोचक बनाने के लिए गद्य की विभिन्न विधाओं जैसे निबंध, कहानी, जीवनी, संस्मरण, एकांकी, यात्रा वृत्तांत, उपन्यास अंश आदि पर आधारित पाठ सम्मिलित किए गए है । साथ ही देश प्रेम, नीति, कर्तव्य भावना और प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण कविताएँ भी दी गई हैं । बच्चों को कविता की आधुनिक रचना शैली से परिचित कराने के लिए नई कविता के पाठ भी दिए गए हैं, जिससे साहित्य की समग्रता के प्रति बच्चों की रुचि बढ़े और उनके ज्ञान एवं ग्रहण कौशल का विकास हो सके ।

पाठों को अच्छी तरह हृदयंगम कराने के लिए प्रत्येक पाठ के अंत में विस्तृत अभ्यास प्रश्न दिए गए हैं । 'बोध और विचार' के अंतर्गत पठित विषय वस्तु को समझने और उस पर विचार करने की योग्यता उत्पन्न करने से संबंधित प्रश्न सम्मिलित किए गए हैं । 'भाषा और व्याकरण' के अंतर्गत भाषा कौशल, वाक्य विन्यास, वाक्य रचना संबंधी प्रश्न दिए गए हैं । 'योग्यता विस्तार' के अंतर्गत ऐसे क्रिया कलाप दिए गए हैं, जो बच्चों में बोलने, सुनने, पढ़ने और लिखने की क्षमता का विकास कर सकें । प्रत्येक पाठ के अंत में 'शब्द कोश' भी दिया गया है, जिसमें पाठ में आए कठिन शब्दों के शब्दार्थ और प्रसंगगत अर्थ बताए गए हैं ।

इस पुस्तकमाला में जिन लेखकों और कवियों की रचनाओं को सम्मिलित किया गया है, उनके प्रति हम हृदय से आभार प्रकट करते हैं । पुस्तक में संशोधनार्थ दिए गए आपके अमूल्य सुझावों का हम सहर्ष स्वागत करेंगे । आशा है, पूर्व की भाँति आपका सहयोग हमें निरंतर मिलता रहेगा ।

— लेखक एवं प्रकाशक

पाठ क्रम

	पाठ	विधा	पृष्ठ
1.	वह जन्म भूमि मेरी	कविता	5
2.	कर्तव्यपरायणता	निबंध	8
3.	ईदगाह	कहानी	12
4.	क्या निराश हुआ जाए	निबंध	18
5.	चिड़िया	कविता	24
6.	सरदार वल्लभभाई पटेल	संस्मरण	28
7.	एक पुरानी कथा	कहानी	33
8.	सत्य की शक्ति	निबंध	39
	जाँच पत्र – 1		44
9.	कर्मवीर	कविता	45
10.	साइकिल की सवारी	कहानी	48
11.	हिमालय की एक घटना	यात्रा वर्णन	55
12.	रानी दुर्गावती	जीवनी	60
13.	नीड़ का निर्माण फिर-फिर	कविता	64
14.	अहिंसा की विजय	कहानी	68
15.	अशोक का हृदय परिवर्तन	एकांकी	73
16.	वीर अभिमन्यु	ऐतिहासिक वृत्तांत	79
	जाँच पत्र – 2		84
17.	झाँसी की रानी	कविता	85
18.	रोमांचकारी कुश्ती	शिकार कथा	91
19.	बिजली का बिल	व्यंग्य	96
20.	सच्चा तीर्थ यात्री	कहानी	101
21.	राखी का मूल्य	एकांकी	107
22.	उड़ चल हारिल	कविता	114
23.	आत्म निर्भरता	निबंध	117
24.	रज्जू का सौदा	कहानी	122
	जाँच पत्र – 3		128

1 वह जन्म भूमि मेरी

इस कविता के रचयिता श्री सोहनलाल द्विवेदी राष्ट्रीय धारा के कवि है । आपकी कविताओं में राष्ट्र प्रेम और देश भक्ति की भावना अभिव्यक्त हुई है । इस कविता को पढ़कर पाठक के मन में भारत माता का सजीव चित्र अंकित हो जाता है । इस कविता में भारत के प्राकृतिक सौंदर्य के साथ-साथ कवि ने कुछ आदर्श महापुरुषों का स्मरण भी किया है ।

वह जन्म भूमि मेरी,
वह मातृ भूमि मेरी ।

ऊँचा खड़ा हिमालय,
आकाश चूमता है,
नीचे चरण तले पड़,
नित सिंधु झूमता है ।
गंगा, यमुना, त्रिवेणी
नदियाँ लहर रही हैं,
जगमग छटा निराली,
पग-पग छहर रही है ।

वह पुण्य भूमि मेरी,
वह स्वर्ण भूमि मेरी ।
वह जन्म भूमि मेरी,
वह मातृ भूमि मेरी ।।1।।

झरने अनेक झरते,
जिसकी पहाड़ियों में,
चिड़ियाँ चहक रही हैं,
हो मस्त झाड़ियों में ।
अमराइयाँ घनी हैं,
कोयल पुकारती है,
बहती मलय पवन है,
तन-मन सँवारती है ।

वह धर्म भूमि मेरी,
वह कर्म भूमि मेरी ।
वह जन्म भूमि मेरी,
वह मातृ भूमि मेरी ।।2।।

जन्मे जहाँ थे रघुपति,
जन्मी जहाँ थीं सीता,
श्रीकृष्ण ने सुनाई
वंशी पुनीत गीता ।
गौतम ने जन्म लेकर
जिसका सुयश बढ़ाया,
जग को दया सिखाई
जग को दिया दिखाया ।

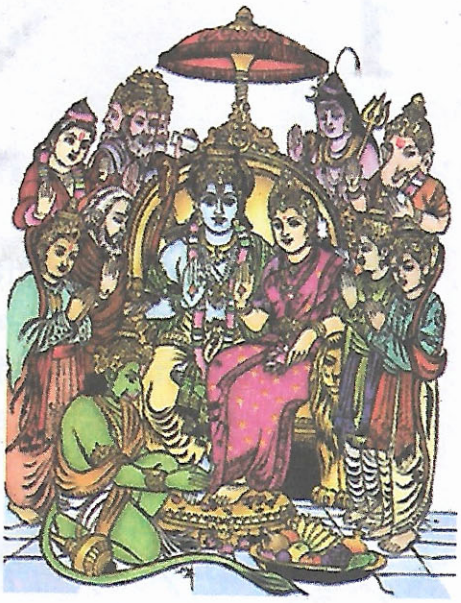

वह युद्ध भूमि मेरी,
वह बुद्ध भूमि मेरी ।
वह जन्म भूमि मेरी,
वह मातृ भूमि मेरी ।।3।।

शब्द कोश

सिंधु	=	समुद्र	छटा	=	शोभा
मस्त	=	आनंद में मग्न	अमराइयाँ	=	आमों के घने वन
मलय पवन	=	मलय पर्वत से आने वाली शीतल, मंद और सुगंधित हवा	रघुपति	=	श्रीराम
			पुनीत	=	पवित्र
सुयश	=	कीर्ति			

अभ्यास

भाव बोध

(क) लिखित प्रश्न

1. हिमालय हमारे देश के किस ओर स्थित है ?
2. भारत माता के चरणों में कौन पड़ा हुआ है ?
3. दूसरे छंद में भारत की किन विशेषताओं का वर्णन किया गया है ?
4. तीसरे छंद में आए महान व्यक्तियों के नाम लिखिए ।

5. श्रीकृष्ण ने बाँसुरी के अलावा क्या सुनाया ?

6. इस कविता को पढ़कर आपके मन में किस भाव का जागरण होता है ?

(ख) बहु विकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने ✓ चिह्न लगाइए –

हमें अपनी मातृभूमि क्यों प्यारी है ?

(क) वह हमारी पुण्य भूमि है ।

(ख) वह हमारी स्वर्ग भूमि है ।

(ग) वह हमारी जन्म भूमि है ।

(घ) वह हमारी बुद्ध भूमि है ।

(ग) निम्नलिखित पंक्तियों का संदर्भ और प्रसंग सहित भावार्थ लिखिए –

जन्मे जहाँ थे रघुपति, जन्मी जहाँ थीं सीता,
श्रीकृष्ण ने सुनाई, वंशी पुनीत गीता ।
गौतम ने जन्म लेकर, जिसका सुयश बढ़ाया,
जग को दया सिखाई, जग को दिया दिखाया ।
वह युद्ध भूमि मेरी,
वह बुद्ध भूमि मेरी ।

(घ) निम्नलिखित शब्दों के चार-चार पर्यायवाची लिखिए –

हिमालय	.....	.....	.....	.....
आकाश	.....	.....	.....	.....
गंगा	.....	.....	.....	.....
चिड़िया	.....	.....	.....	.....
कोयल	.....	.....	.....	.....

योग्यता विस्तार

श्रीराम, सीता, श्रीकृष्ण और गौतम बुद्ध के जीवन के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त कीजिए ।